AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

खाड़ी देशों में भारतीय प्रवासियों की भूमिका का अध्ययनः संयुक्त अरब अमीरात के विशेष संदर्भ में

ORIGINAL ARTICLE

Author
पंकज
राजनीति विज्ञान विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

शोध सार

विदेश मंत्रालय के अनुसार विश्व में हमारे लगभग 31 मिलियन प्रवासी हैं, उनसे संबंधित मंत्रालय को पहले यह नाम प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय को दिया गया था, अब इसका नाम बदलकर विदेश मंत्रालय (एमईए) कर दिया गया है। छह देश (यूएई, कतर, ओमान, बहरीन, सऊदी अरब और कुवैत) हैं जिन्हें वे खाड़ी देश कहते हैं। भारत सरकार के प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआईए) के नवीनतम अनुमान के अनुसार, लगभग 6 मिलियन भारतीय प्रवासी छह खाड़ी देशों में रह रहे हैं और काम कर रहे हैं और इस प्रकार यह भारतीय प्रवास के लिए एक महत्वपूर्ण गंतव्य बन गया है। खाड़ी देशों का एक साझा एजेंडा है और एक समान आर्थिक एवं राजनीतिक संरचना भी है। ये देश अधिकतर शहरी क्षेत्र हैं और संसाधनों से भरपूर हैं । इनकी साक्षरता दर भी अच्छी (75 प्रतिशत से अधिक) है तथा इनके पास कुल पेट्रोलियम संसाधनों का लगभग 2/3 हिस्सा है। 1950 से पहले अधिकांश लोग कृषि पर आधारित थे तथा उस समय कोई तकनीकी उन्नति नहीं थी।

मुख्य शब्द

प्रवासी भारतीय, सॉफ्ट पावर, संस्कृति, आर्थिक विकास.

प्रस्तावना

1950 के बाद उन्होंने अधिक पेट्रोलियम संसाधनों का उपभोग करना शुरू कर दिया। मुख्य रूप से 1970 के दशक के बाद भारतीय लोगों ने इन देशों की ओर पलायन करना शुरू कर दिया और उनमें से मुश्किल से 20 से 25 प्रतिशत कुशल थे और अन्य अकुशल या अर्धकुशल थे । 1970 के बाद इन देशों ने कई परियोजनाएं बनाई, इसलिए उन्हें अन्य देशों से कार्यबल की आवश्यकता थी। 1980 के दशक के बाद मायरोन वेनर ने इनसिपियंट डायस्पोरा शब्द का प्रयोग किया। ये प्रवासी दो या तीन साल के लिए अस्थायी प्रवासी थे। इसके बाद वे वापस स्वदेश लौट जाते थे, क्योंकि किसी भी परियोजना के लिए वे एक ही तरह के अनुबंध में थे और इन प्रवासियों के पास कानूनी और राजनीतिक अधिकार नहीं थे, इसीलिए मायरोन वेनर ने उन्हें प्रारंभिक प्रवासी कहा था। वे अपने परिवार को भी वहां नहीं ले जा पा रहे थे। इन देशों में जनांकिकीय असंतुलन की बुनियाद पर भारतीयों द्वारा श्रम की आवश्यकता को पूरा किया जाता है।

वैश्वीकरण के प्रभाव सर्वव्यापी रहे हैं। सभी आलोचनाओं के बाद भी कोई इन्कार नहीं कर रहा है जैसा कि

पाओला ग्रेनियर कहते हैं: ''वैश्वीकरण दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं और समाजों के बीच बढ़ती परस्पर निर्भरता और एकीकरण है।'' और स्टैनली जे. तंबिया के अनुसार, वैश्वीकरण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता ''लोगों का अंतरराष्ट्रीय आंदोलन'' और ''कई स्थानों पर विविध प्रवासी आबादी के निर्माण में तीव्रता है, जो अपने मेजबान दोनों के साथ जटिल पारस्परिक और अंतरसांस्कृतिक संबंधों में लगे हुए हैं।'' समाज और उनकी उत्पत्ति के समाज। हम कोशिश करेंगे और विश्लेषण करेंगे कि संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय प्रवासियों को वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया में कैसे केंद्रीय रूप से रखा गया है।

भारतीय प्रवासी विश्वकोश के अनुसार 2001 में खाड़ी सहयोग वाले देशों में भारतीयों की संख्या 3.3 मिलियन से अधिक हो गई। यह जीसीसी देशों की कुल जनसंख्या का 11.10 प्रतिशत है, 2002 में अकेले भारतीय कुल प्रवासी आबादी का 28 प्रतिशत थे। मध्य पूर्व में भारतीय उपस्थिति इसका एक लंबा इतिहास है लेकिन यह 1930 के दशक तक भारतीय व्यापारियों तक ही सीमित था, तेल भंडार की खोज और बहरीन पेट्रोलियम कंपनी के विकास के बाद भारतीयों ने बड़ी संख्या में प्रवास करना शुरू कर दिया।

ऐतिहासिक पष्ठभूमि

हम देखते हैं कि प्रवासी भारतीयों की अवधारणा को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझा जाना चाहिए। इस शोध पत्र का उद्देश्य संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय प्रवासियों को वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य से परिभाषित करना है। निस्संदेह यह तर्क दिया जा सकता है कि संयुक्त अरब अमीरात में प्रवासन का हालिया प्रवाह वैश्विक संचार का परिणाम है। गेब्रियल शेफ़र ने अपना ध्यान एक नए जातीय ''प्रारंभिक प्रवासी'' के उद्भव पर केंद्रित किया।

जीसीसी देशों में इन प्रवासियों का प्राकृतिककरण आसान नहीं है, जैसा कि मलयालम उपन्यास ''जैस्मीन डे'' में बान्यामिन कहते हैं, आप्रवासियों और के बीच तनाव के बारे में बात करते हैं।

उन्होंने अपने उपन्यास में निवासियों के बारे में कहा है कि चाहे वह कितना भी आत्मसात क्यों न हो, प्रवास के देश में हमेशा विदेशी ही रहेगा। उनका कहना है कि एक विदेशी हमेशा विदेशी ही रहता है क्योंकि उनका वीज़ा एक बार में दो साल के लिए वैध होता है, बहुत कम लोगों को नागरिकता प्रदान की जाती है। वृद्धि के कारण इन देशों में गैर–नागरिकों की आबादी बढ़ने से उनके प्रवेश पर प्रतिबंध लग जाता है। इन देशों के लिए इस्लाम राज्य धर्म है, शरिया बुनियादी कानून है और अरबी एकमात्र आधिकारिक भाषा है, अन्य लोग सामाजिक रूप से असंबद्ध हैं। खाड़ी देशों में जनशक्ति की कमी है जिसके कारण इन देशों की ओर प्रवासन में वृद्धि होती है।

खाड़ी देश भारत में 27 प्रतिशत प्रेषण और कुल प्रेषण का 40 प्रतिशत उत्पन्न करते हैं। प्रेषण ने विशेष देश जीएनपी की वृद्धि प्रदान की। भारत के जिन अकुशल लोगों को भारत में नौकरी नहीं मिल पाती थी, उन्हें नौकरी मिल रही थी। पैसा वापस भेजने की संभावना अधिक है क्योंकि वहां के परिवार भारत में हैं।

देवेश कपूर के अनुसार इस विशाल और बढ़ते प्रवासी भारतीय की भारतीय विदेश नीति के लिए क्या प्रासंगिकता है? क्या प्रवासी देश के लिए एक रणनीतिक संपत्ति हो सकते हैं, या प्रवासी वास्तव में एक बाधा बन गए हैं? प्रवासी भारतीयों का सुझाव है कि उनका किसी देश की विदेश नीति पर प्रभाव पड़ने की संभावना है? आख़िर कैसे? किन परिस्थितियों में प्रवासी किसी देश का एक तंत्र ''सॉफ्ट पावर'' हैं। सॉफ्ट पावर की अवधारणा जोसेफ नी द्वारा गढ़े जाने के बाद से काफी प्रचलन में है, यह राज्य की अन्य राज्यों की प्राथमिकताओं को अपने अनुसार आकार देने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है, सॉफ्ट पावर एक राज्य की अपनी संस्थाओं के आधार पर दूसरों को आकर्षित करने की क्षमता से बहती है।

संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय प्रवासियों की प्रकृति दुनिया के अन्य प्रवासियों से काफी अलग है, क्योंकि संयुक्त अरब अमीरात में बसने की उनकी इच्छा मेजबान देश की कानूनी व्यवस्था जैसे विदेशियों के लिए नागरिकता अधिकारों की कमी आदि द्वारा सीमित है।

भारतीयों की अंतरराष्ट्रीय संबंध सोच में सॉफ्ट पावर की अवधारणा सहज रूप से आकर्षक रही है। भारत

की सॉफ्ट पावर का अधिक संभावित तंत्र यकीनन इसकी संस्कृति का निर्यात कम और इसके लोगों का निर्यात अधिक है। राजमोहन ने तर्क दिया है कि ''हमारी नरम शक्ति का सबसे बड़ा साधन भारतीय प्रवासी हैं।'' भारत के पूर्व विदेश मंत्री यशवन्त सिन्हा ने इसी तरह कहा कि भारतीय मूल के लोग उन देशों में अपने प्रभाव और सम्मान के माध्यम से अपनी नीतियों के क्रियान्वयन में भारत सरकार के लिए समर्थन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत हैं जहां वे रहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम पुष्टि करता है कि खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) में विदेशी श्रमिकों को ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, यह देखते हुए कि वे नस्लवाद, सामाजिक बहिष्कार, जवाबदेही की कमी और अपने नियोक्ताओं द्वारा शक्ति के दुरुपयोग से उत्पन्न होते हैं। खाड़ी में प्रवासी श्रमिकों की स्थितियाँ नियमित रूप से काम पर मौलिक सिद्धांतों और अधिकारों पर प्स्ब् की घोषणा का पालन करने में विफल रहती हैं, अर्थात् संघ की स्वतंत्रता का अधिकार, सामूहिक सौदेबाजी का अधिकार (उदाहरण के लिए बेहतर मजदूरी या लाभ के लिए), और उन्मूलन का अधिकार। सभी प्रकार के जबरन या अनिवार्य श्रम। खाड़ी राज्यों ने भी संगठन की स्वतंत्रता और संगठित होने के अधिकार के संरक्षण कन्वेंशन की पुष्टि नहीं की है, जिसे 1948 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन द्वारा अपनाया गया था। इस प्रकार, प्रवासी श्रमिक यूनियन नहीं बना सकते हैं या इन अनुचित श्रम प्रथाओं का विरोध नहीं कर सकते हैं।

पश्चिम एशिया में भारतीय प्रवासन पर सबसे कम शोध किया गया है। मायरोन वेनर ने खाड़ी क्षेत्र में भारतीयों के इस अस्थायी प्रवास को ''प्रारंभिक प्रवासी'' के रूप में वर्णित किया। प्रकाश जैन के अनुसार, प्रारंभिक प्रवासी को ''औद्योगिक और तेल उत्पादक अर्थव्यवस्थाओं में विदेशी श्रमिकों का एक अपेक्षाकृत बड़ा समूह जो मेजबान आबादी से जातीय रूप से अलग है'' के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

सरकार ने प्रस्थान से पहले और प्रस्थान के बाद प्रवासियों के शोषण को रोकने के लिए कई कदम उठाए और सभी खाड़ी देशों के साथ भारतीय प्रवासियों की सुरक्षा के लिए द्विपक्षीय और बहुपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इसके अलावा, इसने प्रवासी भारतीय दिवस और प्रवासी भारतीय बीमा योजना जैसे कुछ कल्याणकारी कार्यक्रम भी शुरू किए।

सॉफ्ट पावर के रूप में डायस्पोरा का महत्व

जगदीश भगवती अपने लेख में बताते हैं कि भारत के वर्तमान और भविष्य में प्रवासी भारतीयों की महत्वपूर्ण भूमिका क्यों है। पूर्व प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह स्वीकार करते हैं कि प्रवासी भारतीयों ने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। प्रवासी भारतीयों ने विज्ञान, कला और संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों से भारत को विश्व स्तरीय दर्जा दिलाने में भी योगदान दिया है। आम लोगों द्वारा घर–घर भेजे गए पैसे से लेकर परिवारों को भेजी जाने वाली आय का प्रवाह विकासशील देशों और भारत के लिए वैश्वीकरण से होने वाले लाभों का एक महत्वपूर्ण तत्व बन गया है, जो 2007–08 में 41 अरब डॉलर तक पहुंच गया था। इन प्रेषणों का मुख्य लाभ यह है कि यह सरकार को मिलने वाली अधिकांश विदेशी सहायता के बजाय लोगों के पास पहुँच जाता है।

भारतीयों की अंतरराष्ट्रीय संबंध सोच में सॉफ्ट पावर की अवधारणा सहज रूप से आकर्षक रही है। भारत की सॉफ्ट पावर का अधिक संभावित तंत्र यकीनन इसकी संस्कृति का निर्यात कम और इसके लोगों का निर्यात अधिक है। राजमोहन ने तर्क दिया है कि ''हमारी नरम शक्ति का सबसे बड़ा साधन भारतीय प्रवासी हैं।'' भारत के पूर्व विदेश मंत्री यशवन्तसिन्हा ने इसी तरह कहा कि भारतीय मूल के लोग उन देशों में अपने प्रभाव और सम्मान के माध्यम से अपनी नीतियों के कार्यान्वयन में भारत सरकार के लिए समर्थन का बेहद महत्वपूर्ण स्रोत हैं जहां वे रहते हैं।

भारतीय प्रवासी स्वयं मानते हैं कि उनका प्रवास अस्थायी है, और जबकि वे खाड़ी के भीतर सामुदायिक जीवन बनाने में काफी संसाधन लगाते हैं, वे अपना अधिकांश पैसा घर भेजते हैं, नियमित रूप से भारत लौटते हैं, और ज्यादातर तरीकों से ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि उनका प्रवास अस्थायी है। इस लेख के विषय का अनुमान लगाने

के लिए, सभी प्रतिभागियों–मेजबान सरकारों, भेजने वाले देशों की सरकारों और स्वयं प्रवासियों की ओर से अस्थिरता का भ्रम है। प्रवासी अर्थव्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं, उन पर रहने का दबाव है। अपने स्वयं के सामाजिक परिक्षेत्रों में, वे नागरिकता प्राप्त नहीं कर सकते, अपनी संपत्ति नहीं रख सकते या ट्रेड यूनियनों में शामिल नहीं हो सकते, सामाजिक लाभों तक उनकी पहुंच प्रतिबंधित है, और उन्हें राजनीतिक व्यवस्था में भागीदारी से बाहर रखा गया है। परिणाम एक तीव्र रूप से विभाजित राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था है जिसमें आधी से भी कम आबादी पूर्ण अधिकारों वाले नागरिक हैं, जबकि शेष, दो तिहाई श्रम शक्ति का गठन करने वाले, अधीनस्थ स्थिति में रहने वाले प्रवासी हैं और किसी भी समय निष्कासन के अधीन हैं। .

खाड़ी देशों में भारतीयों का प्रवासः मुद्दे और चुनौतियाँ

मनमोहन सिंह ने प्रवासी भारतीयों के महत्व का वर्णन करते हुए कहा कि प्रवासी भारतीयों ने भारत और विदेशों में उनके द्वारा अपनाए गए घरों के बीच मित्रता और सहयोग के पुल के रूप में काम किया है। भले ही वे सफल पेशेवर, व्यापारी और उद्यमी हों, या दूसरी पीढ़ी के भारतीय हों, जो आराम से अपनी दो पहचानों में सामंजस्य बिठा रहे हों, या भविष्य बनाने के लिए कड़ी मेहनत करने वाले श्रमिक हों उनके परिवार, वे हमेशा दुनिया के लिए भारत की विरासत और उसकी प्रगति के लिए सबसे प्रभावी खिड़की हैं। नरेश का तर्क है कि आर्थिक खिंचाव और धक्का कारक भारत से लोगों को खाड़ी देशों की ओर आकर्षित कर रहे हैं। यह क्षेत्र प्रेषण का मुख्य स्रोत रहा है जिसके कारण भारत के विदेशी भंडार में वृद्धि हुई है। भारत प्रेषण प्राप्त करने में शीर्ष पर है लेकिन, प्रवासन में कुछ मुद्दे और समस्याएं हैं जो सरकार के लिए चुनौती बनी हैं जैसे नियोक्ताओं का शोषण, वेतन देने में देरी, पासपोर्ट रोकना और रहने और काम करने की अपर्याप्त स्थिति। मुख्य चुनौतियाँ अवैध प्रवासन और बेरोजगारी कम करने के लिए खाड़ी में श्रम सुधारों सहित स्वदेशीकरण नीतियों का कार्यान्वयन हैं। खराड़िया ने कहा कि भारतीय प्रवासी अपने मूल देश के साथ घनिष्ठ सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध बनाए हुए हैं। अतः विभिन्न देशों में प्रवासियों का उनके अधिकारों, रोजगार शोषण, धोखाधड़ी आदि के संबंध में ध्यान रखने की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

खाड़ी की ओर भारत की प्रवासन नीति में आदर्श बदलाव

खदरिया के अनुसार 2006 में अधिकांश प्रेषण विकसित देशों से आ रहे थे, हालाँकि, खाड़ी देशों में प्रवासियों के बढ़ने के साथ, यह बड़े अनुपात के साथ आगे निकल गया। खाड़ी क्षेत्र को प्रेषण के मुख्य स्रोत के रूप में देखा गया है जिससे भारतीय विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, 1990–91 में भारत को प्राप्त धन प्रेषण 2,083 मिलियन अमेरिकी डॉलर, 2000 में 12,290 मिलियन अमेरिकी डॉलर था। भारत पिछले 23 वर्षों से विदेशों में अपने प्रवासियों से धन प्राप्त करने वाले देशों की सूची में लगातार शीर्ष पर रहा है, जो लगभग दस प्रतिशत है। दुनिया भर में भेजे जाने वाले धन का बड़ा हिस्सा भारतीय प्रवासियों द्वारा घर भेजा जाता है। इस आधुनिक युग में भी भारतीयों के लिए रहने और काम करने की स्थितियाँ कठोर, अमित्र और सबसे बुरी हैं। भारतीयों का शोषण इस हद तक किया जाता है कि कभी–कभी स्थानीय लोग पासपोर्ट भी रोक लेते हैं। भारतीय मजदूरों को निर्धारित राशि का भुगतान करें, कोई ओवरटाइम वेतन नहीं, अपर्याप्त परिवहन और चिकित्सा सुविधाएं भी। 2004 में गठित नए प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय ने एक आदर्श बदलाव लाने और उनकी सुरक्षा के लिए कल्याण घटक पेश करने की पहल की है। एक यूनिवर्सल इंटीग्रेटेड इलेक्ट्रॉनिक रेमिटेंस गेटवे, प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय और भारतीय बैंकों के बीच एक साझेदारी, जिसका उद्देश्य प्रेषण के प्रसारण को अधिक सुविधाजनक और कम खर्चीला बनाना है। प्रवासी भारतीय बीमा योजना (पीबीबीवाई), 2006 से एजेंटों द्वारा भर्ती किए गए सभी श्रमिक प्रवासियों के लिए 500,000 रुपये के बढ़े हुए कवर के साथ एक अनिवार्य बीमा पॉलिसी है। बीमा कंपनियों की बढ़ती संख्या मृत्यु, विदेश में रोजगार के दौरान शारीरिक विकलांगता, मृत्यु के मामले में शरीर के परिवहन, महिला प्रवासियों के लिए मातृत्व लाभ, भारत में प्रवासियों के परिवारों के लिए चिकित्सा लाभ जैसी आकस्मिकताओं के लिए उचित प्रीमियम पर कवर प्रदान कर रही है, आदि/एक प्रवासी भारतीय श्रमिक कल्याण कोष।

फारस की खाड़ी क्षेत्र में 'प्रारंभिक' प्रवासी भारतीयों में संस्कृति और अर्थव्यवस्था में सम्बन्ध

खाड़ी देशों में जाने वाले अधिकांश भारतीय प्रवासी पुरुष हैं, यही कारण है कि खाड़ी देशों में महिलाओं के लिए बहुत कम अवसर हैं। नर्सिंग, स्कूल शिक्षण और घरेलू सेवा कुछ ऐसे व्यवसाय हैं जो महिलाओं के लिए खुले हैं और इनके लिए भी विभिन्न देशों के संभावित प्रवासियों के बीच प्रतिस्पर्धा तीव्र है। भारतीयों के प्रति उदार रुख रखने वाले यूएई में ट्रेड यूनियनवाद और हड़तालें गैरकानूनी हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार, कुशल और अकुशल श्रमिकों की संख्या लगभग 70 प्रतिशत भारतीय है। 1998 में प्रवासी, लगभग 20 प्रतिशत सफेदपोश श्रमिक और लगभग 10 प्रतिशत पेशेवर थे। जब हम बरगद के पेड़ की टैगोर सादृश्य में भारतीयों के सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व के बारे में बात करते हैं। टैगोर का विचार है कि विदेशों में भारतीयों का बसना भव्य पुराने बरगद के पेड़ के प्रसार के समान है। इस सादृश्य में यह धारणा निहित है कि भारतीय संस्कृति के साथ–साथ सामाजिक संगठनात्मक पैटर्न को विदेशों में प्रत्यारोपित किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से वास्तविकता से मेल नहीं खाता है। प्रवासी भारतीय समुदायों के बीच सामाजिक संगठन की प्रकृति और पैटर्न कई स्थानीय कारकों से भिन्न–भिन्न रूप से प्रभावित हुए हैं। इनमें सबसे प्रमुख हैं रोजगार की प्रकृति और शर्तें। औपनिवेशिक/महानगरीय समाजों में प्रारंभिक रोजगार के प्रकार और सामाजिक–राजनीतिक स्थितियाँ, जिनके तहत ऐसे रोजगार को अपनाया गया था, विदेशों में भारतीय विभिन्न सामाजिक संगठनों और सामुदायिक जीवन के विकास के व्यापक मापदंडों का निर्माण करते हैं।

खाड़ी में भारतीय प्रवासियों के अन्य पक्ष

वे विशेष रूप से भारत से खाड़ी में श्रमिकों के प्रवास के पैटर्न और रुझानों के बारे में बात करते हैं और फिर इसकी तुलना अन्य देशों से खाड़ी में प्रवास के साथ करते हैं जो भारतीय प्रवासियों में खाड़ी देशों के योगदान को समझने में मदद करता है। वे खाड़ी में भारतीय प्रवासियों की प्रोफ़ाइल भी दिखाते हैं, लगभग 70 प्रतिशत भारतीय, घरेलू नौकरों और ड्राइवरों के रूप में, निर्माण क्षेत्र में मजदूरों या तकनीशियनों के रूप में काम करते हैं। हालाँकि, पिछले दशक में कुशल और उच्च कुशल प्रवासन की प्रवृत्ति बढ़ी है और अगर हम भारतीय श्रमिकों के प्रवासन में क्षेत्रीय पैटर्न को देखें, तो प्रवृत्ति में बदलाव देखा जा सकता है। भारत से खाड़ी में श्रमिक प्रवास के प्रारंभिक चरण के दौरान, श्रमिक मुख्य रूप से केरल से थे, लेकिन हाल ही में उत्तर प्रदेश और बिहार उभरे हैं। उत्तर प्रदेश से पलायन बड़े पैमाने पर कम कुशल श्रमिकों द्वारा होता है, केरल से अधिक कुशल और शिक्षित श्रमिकों को पलायन करते देखा जा सकता है। भारत से खाड़ी देशों की ओर श्रमिकों के प्रवास की प्रवृत्ति केरल, तेलंगाना और तमिलनाडु जैसे राज्यों से उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों की ओर स्थानांतरित हो रही है। विदेश मंत्रालय द्वारा प्रकाशित उत्प्रवास मंजूरी डेटा में इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस प्रवासन का प्रभाव भारत और खाड़ी देशों दोनों पर पड़ता है।

उनके अनुसार, पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों में प्रवासी एक महत्वपूर्ण कारक बन रहे हैं। यह विशेष रूप से अरब खाड़ी क्षेत्र (जीसीसी देशों) के मामले में सच है, जो कई दशकों से भारत की सबसे बड़ी प्रवासी आबादी की मेजबानी कर रहा है। इसने भारत और खाड़ी देशों के बीच एकजुटता की मजबूत भावना को भी बढ़ावा दिया है। आर्थिक उदारीकरण की पूरी अवधि के दौरान, भारतीय प्रवासी भारत की वृद्धि और विकास में एक महत्वपूर्ण हिस्सा और योगदानकर्ता बन गए हैं। प्रेषण, सॉफ्ट पावर संपत्ति, शिक्षा और विशेषज्ञता, व्यावसायिक रुचि, मीडिया, भाषा और मनोरंजन, सांस्कृतिक संपर्क ये कुछ ऐसे पहलू हैं जो भारतीय प्रवासियों में वृद्धि और विकास को बढ़ावा देते हैं। इस प्रकार, खाड़ी क्षेत्र में भारतीयों की उपस्थिति और दैनिक जीवन में उनका योगदान काफी महत्वपूर्ण है और मात्रा और गुणवत्ता दोनों में बढ़ने की उम्मीद है। भारत सरकार को भारतीय प्रवासियों की क्षमताओं को बढ़ाने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, जिन्होंने खाड़ी अर्थव्यवस्थाओं को निम्न–स्तरीय वाणिज्यिक गतिविधि से उच्च–स्तरीय कॉर्पोरेट और उपभोक्ता सेवाओं में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नई दिल्ली को और अधिक एजेंसियां स्थापित करने की आवश्यकता है जो विदेशों में भारतीयों को सलाह दें और श्रमिकों के कल्याण और सुरक्षा की देखभाल करें, खाड़ी देशों के साथ 'मानक श्रम निर्यात समझौते' को क्रियान्वित करें, और उनकी सुरक्षा के लिए

खाड़ी में एनआरआई के लिए निवेश और बचत योजनाओं को बढ़ावा दें इसलिए, खाड़ी क्षेत्र के लिए एक विशिष्ट भारतीय नीति विकसित करना महत्वपूर्ण हो जाता है, जिसमें मुख्य रूप से 'भारतीय प्रवासी' पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, क्योंकि खाड़ी में बदलती परिस्थितियों से निपटने के लिए निरंतर जुड़ाव, निरंतर राजनयिक संबंध और आर्थिक निवेश की आवश्यकता होती है।

जीसीसी देशों में भारतीय प्रवासीः केरल के संदर्भ में

इस लेख में, शामनाद खाड़ी देशों में भारतीय राज्य की प्रवासी संस्कृति को समझाने के लिए केरल का उदाहरण लेते हैं। प्रवासन मानव में एक अपरिहार्य प्रवृत्ति है और यह प्रवासी समुदाय को जन्म देती है। ''डायस्पोरा'' एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ 'फैलाव' है, जो ''फिलिस्तीन के बाहर निर्वासन में रहने वाले'' विभिन्न यहूदी समुदायों को संदर्भित करता है। प्रवासी शब्द अब आम तौर पर अन्य देशों में रहने वाले या स्थायी रूप से बसने वाले प्रवासियों के समुदायों के लिए सामान्य अर्थ में उपयोग किया जाता है, जो अपनी उत्पत्ति और पहचान के बारे में जानते हैं और मातृ देश के साथ अलग–अलग स्तर के संबंध बनाए रखते हैं। भारतीय प्रवासी– शायद दुनिया का सबसे पुराना प्रवासी, तीसरा सबसे बड़ा (20 मिलियन), दुनिया के 110 देशों में फैला हुआ है। जीसीसी देशों में प्रवासी भारतीय कामगार (ओआईडब्ल्यू) मुख्य रूप से चार राज्यों केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश से आते हैं। हालाँकि, उनमें से अधिकांश की उत्पत्ति केरल से हुई है। इससे अनिवासी केरलवासियों के लिए एक अलग मंत्रालय और तिरुवनंतपुरम में एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की स्थापना हुई। संपूर्ण भारत की तुलना में, केरल ने 21वीं सदी में प्रवासियों का योगदान औसतन 25 प्रतिशत किया, जो कि बीसवीं सदी के 35 प्रतिशत के औसत से कम है। दूसरे शब्दों में, खाड़ी में रहने वाले हर तीन या चार भारतीयों में से एक केरलवासी रहा है। परिणामस्वरूप केरल की प्रति व्यक्ति आय न केवल भारत की औसत प्रति व्यक्ति आय के बराबर हो गई, बल्कि नब्बे के दशक के अंत तक राष्ट्रीय औसत से 49 प्रतिशत ऊपर पहुंच गई।

निष्कर्ष

भारतीय प्रवासी हमारे विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मेजबान और गृह देश के बीच सेतु, हमारे सांस्कृतिक राजदूत, प्रतिनिधि, एक नरम शक्ति के रूप में भूमिका निभाते हैं, उसके बाद इतने सारे प्रासंगिक योगदान के बाद वे मेजबान देश में इतनी सारी समस्याओं का सामना भी करते हैं। वे बहुत महत्वपूर्ण हैं, हमें उनकी समस्याओं को जानना होगा और उनकी समस्या को दूर करना होगा, क्योंकि वे राष्ट्र के लिए संसाधनों की भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ सूची

1. खदरिया, बी. (2010) भारत में प्रतिमान परिवर्तन < खाड़ी, मध्य–पूर्व संस्थान की ओर प्रवासन नीति।
2. वेनर, एम. (1982) अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन और विकासः फारस की खाड़ी में भारतीय, जनसंख्या परिषद्।
3. सुधावेनी, एन. (2015) *खाड़ी देशों में भारतीय प्रवासनः मुद्दे और चुनौतियाँ,* CASIRJ।
4. जैन, पी. (2003) *फारस की खाड़ी क्षेत्र में 'प्रारंभिक' प्रवासी भारतीयों में संस्कृति और अर्थव्यवस्था,* रूटलेज प्रकाशन।
5. भगवती, जे. (2010) भारतः प्रवासी भारतीयों की भूमिका, प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन।
6. कपूर, देवेश. (2010) प्रवासी, लोकतंत्र और विकासः यूएसए, प्रिंसटन विश्वविद्यालय, *अर्थशास्त्र टाइम्स,* 9 अप्रैल 2019।
7. अब्राहम, आर. (2012) अरब खाड़ी देशों में भारत और उसके प्रवासीः प्रभावी 'सॉफ्ट पावर' और संबंधित सार्वजनिक कूटनीति का दोहन।
8. शामनाद एन. (2013) जीसीसी देशों में भारतीय प्रवासीः केरल का मामला, अरबी विभाग, यूनिवर्सिटी का कॉलेज।

——==00==——